खास मुलाकात चंबल में खौफ का पर्याय रहे कुख्यात डाकू पंचमसिंह से ब्रह्माकुमार तक का सफर

एक विचार ने बदली जीवन की दिशा

माउण्ट आबू। जिनका नाम सुनते ही लोगों की सांसें थम जाती थी। जिनके खौफ में गांव से लेकर शहर के गली-मोहल्लों में वीरानी छा जाती। जिनके नाम से बच्चों का रोना बंद हो जाता था। चंबल के 25 जिलों में हुकूमत चलती। ऐसे 550 डाकूओं के सरदार और खौफ का पर्याय थे डाकू पंचमसिंह। आइए जानते हैं एक कुख्यात डाकू और खौफ का पर्याय रहे पंचमसिंह कैसे राजयोगी ब्रह्माकुमार पंचम भाई बने। पंचम भाई की शिव आमंत्रण से खास मुलाकात।

पिताश्री प्रजापिता ब्रह्मा बाबा को श्रृद्धांजलि देते बीके पंचम भाई।

कल का डाकू

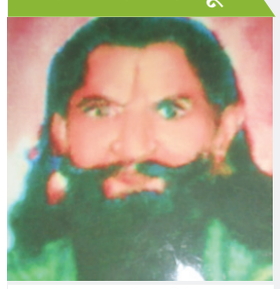

कुख्यात डाकू पंचमसिंह।

आज का राजयोगी

ब्रह्माकुमार पंचम भाई।

विचारों में परिवर्तन जरूरी

पंचम भाई बताते है कि विचारों का परिवर्तन करना जरूरी है। विचारों से ही व्यक्ति दानव और देवता बनता है। हमारे जैसे विचार होंगे, वैसे ही हमारे कर्म होंगे। यदि हमारे विचार अच्छे, श्रेष्ठ, कल्याणकारी और दूसरों को सुख देने वाले होंगे तो बदले में हमें भी सुख मिलेगा। विचार ही सुख-दुख देते हैं। हमारे सोचने, समझने से ही कोई समस्या बड़ी या छोटी होती है। अपने विचारों को, नजरिए को सकारात्मक और श्रेष्ठ बनाइए, आपकी जिंदगी खुशहाली, आनंद और सुख से भरपूर हो जाएगी।

पवित्रता की बात उतरी दिल में

सन् 1972 की बात है जब मुंगावली, जिला गुना, मप्र जेल में ब्रह्माकुमारीज़ की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि, ब्रह्माकुमार जगदीश भाई का प्रवचन का कार्यक्रम रखा गया। उस दिन दादी द्वारा पवित्रता के ऊपर जो प्रवचन दिए उस एक विचार ने डाकू पंचमसिंह की जिंदगी की दिशा ही बदल दी। तभी से उन्होंने जीवन को शांतिमय,सुखमय और समाज कल्याण में लगाने के लिए ठानी और दानवी मार्ग से दैवी मार्ग की ओर चल पड़े। 8 वर्ष में ही सरकार ने हमें जेल से छोड़ दिया।

25 जिलों थी हुकूमत

90 वर्षीय ब्रह्माकुमार पंचम भाई बताते है कि मुझ पर 100 कत्ल, 200 पकड़, अपहरण, डकौती का आरोप था। न्यायालय ने फांसी की सजा दी थी। 1958 से 1972 के 14 वर्ष तक चंबल के बीहड़ों से लेकर अंचल के 25 जिलों में उनकी हुकूमत थी। उनका नाम सुनते ही लोगों की सांसें थम जाती थी। रेल हमें सलामी देते हुए निकलती थी। आगरा जैसे शहर में नाम सुनते ही बंद हो जाते थे। हम डाकूओं की एकता ऐसी थी कि भारत सरकार को भी हमारे सामने नतमस्तक होना पड़ा। इंदिरा गांधी की सरकार ने हमें पकड़ने के लिए एक करोड़ रुपए का इनाम घोषित किया था। तमाम ऑपरेशन चलाए गए, फोर्स बुलाई गई, हजारों जवान हमें पकड़ने के लिए दिन-रात लगे रहते थे। पंचम भाई ने बताया कि एक बार एक गांव में लोगों ने जहर दे दिया जिससे 20 लोग मारे गए। बदले में हमने 150 लोगों को मार दिया।

सरकार के समक्ष रखी शर्तें

हमारे समर्पण में लोकनायक जयप्रकाश नारायण का महत्वपूर्ण योगदान रहा। समर्पण के लिए भारत सरकार के सामने अपनी कुछ शर्तें रखी कि सभी 550 डाकुओं की फांसी की सजा माफ हो, सभी को जमीन दी जाए, सभी के बच्चों को पढ़ाई एवं नौकरी, परिवार के साथ रखा जाए। साथ ही हमारे द्वारा सताए गए लोगों को भी सहायता दी जाए। इस पर सरकार ने हमारी सभी मांगे मानी और तत्कालीन राष्ट्रपति फखरुद्दीन ने हमारी फांसी की सजा माफ की।

दैवी को प्रतिदिन एक किलो घी की देते थे आहुति

पंचम भाई ने बताया कि हम सभी डाकू देवी की साधना करते थे और प्रतिदिन एक किलो घी की आहुति देते थे। एक बार मैंने दृढ़ संकल्प किया कि देवी के दर्शन करके ही रहूंगा। और दो दिन, तीन रात तक बिना खाए पिए देवी की अखंड साधना की। फिर भी देवी के दर्शन नहीं हुए, तभी मैंने संकल्प किया कि अब से जीवन भर कभी भी देवी की आराधना नहीं करेंगे। मैंने गुस्से में देवी मां की प्रतिमा भी तोड़ दी और बंदूक उठाकर लोगों का संहार करने निकल पड़ा। दोपहर के करीब 12 बजे रहे थे तभी रास्ते में एक अदृश्य प्रकाश की शक्तिशाली, आनंदकारी किरणें मेरी ऊपर पड़ी और आवाज आई कि बच्चे कुछ ही समय बाद तुम्हारे पास चैतन्य देवियां आएंगी और भगवान के पास ले जाएंगी। जिसके कुछ दिनों बाद ही हम लोगों ने समर्पण कर दिया और जेल में साक्षात चैतन्य देवियों के रूप में ब्रह्माकुमारी बहनों द्वारा ज्ञानामृत एवं भगवान से मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

खुद बदल बदली हजारों की जिंदगी

पंचम भाई 18 राज्यों के 400 जिलों में विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से जन-जन को ईश्वरीय संदेश दे चुके हैं। उनका मानना है कि ब्रह्माकुमारीज़ के ज्ञान से जिस तरह उनका जीवन बदला है, उसी तरह सभी लोगों को भी सत्य का ज्ञान और आत्मा-परमात्मा का ज्ञान मिले ताकि अपने जीवन को सफल, सुखमय बना सके।

लोगों के अन्याय के कारण बना डाकू

14 अप्रेल 1924 में ग्राम सींमपुरा, जिला भिंड, मध्यप्रदेश के एक सामान्य परिवार में जन्में पंचमसिंह एक भाई और दो बहनों में सबसे बड़े है। पिता खेती करते थे और गांव के स्कूल में ही चौथी तक पढ़ाई की। चम भाई बताते है कि जैसे ही जवानी की दहलीज पर पहुंचे तो एक बार गांव के लोगों ने उन्हें बहुत मारा-पीटा, उनके साथ अन्याय हुआ, कई तरह से लोगों ने परेशान किया। इन सभी समस्याओं से तंग आकर उन्होंने डाकू बनने का मन बनाया। मेरी सोचना था कि एक दिन में चंबल का प्रसिद्ध डाकू बनूंगा। उस दिन से बंदूक उठाई और डाकुओं की फौज तैयार की।

बेगुनाहों को कभी नहीं सताया

पंचम भाई बताते है कि हम डाकूओं का सिद्धांत था कि कभी भी बेगुनाहों को नहीं सताएगें। साथ ही हम लोग गरीबों के लिए आर्थिक सहायता भी देते थे। उस समय जिन लोगों की मासिक आय एक लाख होती तो उसमें से 10 हजार रुपए हम लोग लेते थे और उस पैसे को गरीबों, जरूरतमंदों में बांट देते थे। हमने गरीब परिवारों के लिए कई मकान भी बनवाए थे।

बाबा द्वारा दी हुई ऊर्जा आज भी दौड़ रही है

मैं तो बचपन से ही ब्रह्मा बाबा के अंग-संग पली बढ़ी। लेकिन जिस तरह से शिवबाबा ने बाबा के तन में आकर नई दुनिया की स्थापना का कार्य प्रारंभ किया वह किसी अजूबे से कम नहीं था। उसमें भी माताओं बहनों को आगे रखकर जो एक नया मुकाम दिया वह अपने आप में अनोखा और दिव्य था। जैसे-जैसे शिवबाबा को पहचानते गए जिंदगी में बदलाव और शक्ति बढ़ती गई।

आज भी बाबा अवतरित होकर अपना कार्य करा रहे हैं। जल्दी ही नई दुनिया की स्थापना हो जाएगी। मुझे खुशी है कि हमारा सारा जीवन परमात्मा द्वारा रचे हुए यज्ञ में सफल हो गया। बाबा ने प्रारंभ के दिनों में जिस तरह से शक्ति और ऊर्जा भरी वह आज भी उसी गति से दौड़ रही है। ईश्वर पर जीवन अर्पण करना और नई दुनिया के कार्य में सहयोगी बनना एक सुखद अहसास है। सर्व मनुष्य आत्माओं को परमात्मा का ये संदेश है कि सभी मनुष्य आत्माएं परमपिता परमात्मा से आकर अपने अधिकारों की वर्षा लें तथा नई दुनिया के सहभागी बने।

राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी, संयुक्त मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़, माऊंट आबू, राजस्थान

एक बार जरूर अपने पिता से मिलें

वैसे तो परमात्मा के बारे में सिर्फ हमने सुना था कि परमात्मा इस रूप में आता है, ऐसे मिलता है। परन्तु मुझे कभी यह विश्वास नहीं हुआ कि हम कभी परमात्मा से मिल पाएंगे। परन्तु मैं उन भाग्यशाली लोगों में से हूं जिन्हें केवल परमात्मा मिलन का ही नहीं, बल्कि हर पल उनके अंग-संग रहने का अवसर मिल रहा है। सत्तर के दशक में मैं अपनी नौकरी छोड़कर परमात्मा द्वारा जो दुनिया

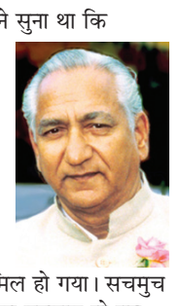

बदलने का महान कार्य चल रहा है उसमें शामिल हो गया। सचमुच ईश्वर हमारा पिता है, हम उनके बच्चे हैं। इसका एहसास तो तब होता हैं जब वास्तव में उनसे मिलते हैं। उनके प्यार का एहसास करते है। परमात्मा इस दुनिया में साकार रूप में आकर विश्व बदलाव का कार्य कर रहे हैं। मैं तो सभी से अपील करता हूं कि जो भी इस दुनिया में परमात्मा के बच्चे हैं, एक बार आकर जरूर अपने सच्चे परमपिता परमात्मा से मिले और अपने जीवन को श्रेष्ठ और मूल्यवान बनाएं।

ब्रह्माकुमार निर्वैर, महासचिव, ब्रह्माकुमारीज़, माउण्ट आबू

परमात्मा ने मुझे अपना बच्चा कहा

सन् 1960 में पहली बार बैंगलोर में ब्रह्माकुमारी संस्था के सम्पर्क में आया। वहां मुझे बताया गया कि परमात्मा का अवतरण हो गया है। यह सुनते ही मैंने उनसे मिलने का निश्चय किया और बिना देर किए माउण्ट आबू के लिए रवाना हो गया और माउण्ट आबू पहुंच गया। जब मैं आबू पहुंचा तो देखा कि एक इतना धनवान व्यक्ति जिसका कनेक्शन महारानी एलिजा बेथ से लेकर तमाम

नामीग्रामी व्यक्तियों के साथ है। वह एक झोपड़ी में बैठकर साधु की तरह तपस्या कर रहा है। मैं यह सब देखकर स्तब्ध रह गया। मैं सात दिन तक पूरे समय उनके अंग-संग रहा। हमने पाया कि उनके जो भी कर्म थे वे बिल्कुल अलग थे। स्थूल काम भी होता तो उनके टच करते ही सबकुछ बदल जाता। उनके बोल-चाल सबकुछ बिल्कुल भिन्न। जब उन्होंने मुझे बच्चा कहकर अपनाया तो मैंने हमेशा के लिए अपना जीवन समर्पित करने का निश्चय कर लिया और आज भी उस ईश्वरीय शक्ति से मिलन होता है।

ब्रह्माकुमार करुणा, प्रबंध निदेशक, पीस ऑफ माइंड चेनल, आबू रोड

समस्याओं का अपने आप होने लगा समाधान

जब मैं इस संस्था के सम्पर्क में आया तो देखा कि यहां आने से ही समस्याओं का अपने आप समाधान होने लगा। परमात्मा की शिक्षा एवं उनके महावाक्य बिल्कुल सहज और असाधारण हैं। पवित्र बनने की शक्ति, सत्यता को परखने की शक्ति, संबंधों के निभाने की निपुणता, दिव्यता, मधुरता आदि की शक्ति स्वयं परमात्मा के सान्निध्य में आने से ही विकसित होने लगती है। उनकी एक दृष्टि

जीवन बदल देती है। मैं तो यह नहीं समझ पाया कि परमात्मा ने कैसे मुझे अपना बनाकर इस विश्व परिवर्तन के कार्य में सहयोगी बना लिया। मैं धन्य हूँ जो परमात्मा के हर कार्य में मददगार हूं। दुनिया के सभी लोगों से मेरी अपील है कि इस कलियुग के अन्त में परमात्मा के रूप को पहचाने और अपने को श्रेष्ठवान बनाएं।

ब्रह्माकुमार मृत्युंजय, कार्यकारी सचिव, ब्रह्माकुमारीज़, माउण्ट आबू

स्वयं परमात्मा आते शिक्षा देने

ब्रह्माकुमारीज़ में जब हम परमात्मा से मिलने गए तो उस समय वहां का महौल और वातावरण में एक अलग प्रकार की एनर्जी होती है और गहन शांति का वातावरण होता है। जिसकी अनुभूति मुझे हुई। तो मैं इसी आधार पर कह सकता हूं कि वहां पर परमात्मा स्वयं शिक्षा देने के लिए आते हैं। समाज हमेशा से परिवर्तनशील रहा है और यह चक्र हमेशा चलता रहता है। कलियुग के बाद सतयुग आना ही है।

अश्विनी कुमार, अपर पुलिस अधीक्षक, पटना, बिहार

परमात्मा से मिलना जिंदगी के अमूल्य क्षण

मैं तो अपने जीवन को सोचकर धन्य हो जाती हूं कि मेरा जीवन कितना श्रेष्ठ है। पता नहीं मेरे में क्या विशेषता थी कि स्वयं परमात्मा ने 16 वर्ष की आयु में ही विश्व परिवर्तन के कार्य में लगा लिया। सुबह उठते भी बाबा का साथ, सोते भी बाबा का साथ, इतना बड़ा कारोबार, इतना बड़ा परिवार ये सब परमात्मा का ही तो है। परमात्मा स्वयं मुझे सम्भालता है। मेरा अनुभव है कि यदि आप परमात्मा को अपना बनाओ तो आपकी पालना वही करेगा। संस्था की पूर्व मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी के साथ रहने का जो अवसर मिला था जिसके कारण मैं परमात्मा के और करीब आ गई। आज हमारे खून में सिर्फ परमात्मा की सेवा और याद दौड़ती है। परमात्मा से मिलना उनसे शक्ति लेना जिन्दगी के अमूल्य क्षण है।

राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी मुन्नी, कार्यक्रम प्रबंधक, ब्रह्माकुमारीज़, शांतिवन, आबू रोड

परमात्मा की दृष्टि पड़ते ही खो बैठा सुध-बुध

एक मित्र ने बताया कि ब्रह्माकुमारीज़ में स्वयं भगवान पढ़ाते हैं। पहली बार तो मुझे विश्वास नहीं हुआ, लेकिन जब मैं ब्रह्माकुमारीज़ के सेवाकेंद्र पर गया तो मुझे वहां की स्वच्छता और सादगी ने बहुत प्रभावित किया। सात दिन का राजयोग कोर्स करने के बाद सहज ही विश्वास हो गया कि यहां भगवान स्वयं आते हैं। जब दादी के तन में परमात्मा का अवतरण हुआ तो उनकी दृष्टि मुझ पर पड़ते ही मैं अपना सुध-बुध भूल गया और मुझे बहुत ही गहन शांति की दुनिया की अनुभूति हुई जो कि इस धरा पर संभव नहीं है। जब उन्होंने महावाक्य उच्चारे तो मेरे आश्चर्य का ठिकाना ही नहीं रहा, उनके वे मधुर बोल थे, बच्चे तुम्हें पावन बनाकर वापस अपने घर ले जाने आया हूं। सच में ये महावाक्य परमात्मा के सिवाए कोई मनुष्य बोल ही नहीं सकता है।

बद्री विशाल तिवारी, सहायक निदेशक, कृषि विभाग, उप्र सरकार

शिव के साथ क्यों जुड़ा रात्रि का संबंध

विश्व की सभी महान विभूतियों के जन्मोत्सव प्राय: जन्मदिन के रूप में मनाए जाते है, लेकिन एक परमात्मा शिव की जयंती ही ऐसी है जिसे जन्मदिन न कहकर शिवरात्रि के नाम से पुकारा जाता है। इसका अर्थ यह है कि परमात्मा शिव जन्म-मरण से न्यारे अथवा अयोनि हैं। उनका अन्य किसी महापुरुष या देवता की तरह कोई लौकिक या शारीरिक जन्म नहीं होता है। कि उनका जन्मदिन मनाया जाए।

कल्याणकारी विश्व पिता शिव तो अलौकिक अथवा दिव्य जन्म लेकर अवतरित होते हैं। उनकी जयंती संज्ञावाचक नहीं, बल्कि कर्त्तव्यवाचक रूप से ही मनाई जाती है। उनका दिव्य अवतरण विषय-विकारों की कालिमा से लिप्त अज्ञान निद्रा में सोए हुए मनुष्य को जगाने के लिए होता है। शिवरात्रि फाल्गुन मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को अमावस्या के एक दिन पहले मनाई जाती है।

फाल्गुन वर्ष का अंतिम मास होता है और उसकी चौदहवीं रात्रि घोर अंधकार की निशानी है। इस दिन शिवरात्रि मनाने का आध्यात्मिक रहस्य यह है कि परमात्मा शिव ने कल्पान्त के घोर अज्ञानता रूपी रात्रि के समय पुरानी सृष्टि के विनाश से थोड़ा समय पूर्व अवतरित होकर पापाचार का विनाश करके दु:ख, अशांति को हरा था।

परमधाम निवासी हैं परमात्मा शिव

गीता के 15वें अध्याय के छठें श्लोक में लिखा है कि परमात्मा परमधाम निवासी है। वह इस साकार दुनिया में मनुष्यात्माओं की तरह जन्म-मरण के चक्कर में नहीं आता, इसलिए उसे सृष्टि के आदि-मध्य-अंत का ज्ञान है। ज्योतिर्बिन्दु त्रिमूर्ति परमात्मा शिव और सभी धर्मों की आत्माएं अव्यक्त वंशावली में इसी लोक में निवास करती हैं। इसे ब्रह्मलोक, परमधाम, शांतिधाम, निर्वाणधाम, मोक्षधाम अथवा शिवपुरी कहा जाता है। इस लोक में न संकल्प है, न कर्म हैं। अत: वहां न सुख है, न दु:ख है बल्कि एक न्यारी अवस्था है। इस लोक में अपवित्र अथवा कर्म बंधन वाला शरीर नहीं होता है। वही सर्व मनुष्यात्माओं का परमपिता, परमशिक्षक व परम सदगुरु है, क्योंकि परमधाम में रहने के कारण वह ऊंच ते ऊंच है व साकार में गर्भ में प्रवेश न करने के कारण उनके माता-पिता, टीचर व गुरु भी नहीं होते हैं। आज यही तीनों रिश्ते सर्वोच्च माने जाते हैं। सभी आत्माएं भी परमात्मा के लिए ऊपर की ओर इशारा करती हैं।

अवजानन्ति माँ मूढ़ा मानुषी तनुमाश्रितम्, परं भावमजानन्तो मम भूतमहेश्वरम्।

परमात्मा ने गीता में नौवें अध्याय 11वें श्लोक में कहा है कि मनुष्य तन का आश्रय लेने वाले मुझको मूढ़मति लोग नहीं जानते। यद्यपि मैं महेश्वर (परमात्मा) हूँ तो भी व्यक्त भाव वाले वे लोग मुझे नहीं पहचान सकते। वहीं यजुर्वेद (32/2) का वचन है कि सर्वे निमेषा जज्ञिरे विद्युत पुरूषाधि, अर्थात वह विद्युत पुरुष ज्योतिर्लिंग प्रगट हुआ जिससे निमेष जज्ञिरे विद्युत पूरुषादधि, अर्थात् जिससे निमेष कला का आदि का प्रारम्भ हुआ।

निराकार का अवतरण क्यों?

परमात्मा के दिव्य अवतरण के रहस्य को समझ लेने से अनेकानेक गुत्थियां सहज ही सुलझ जाती है। अब प्रश्न उठता है कि परमात्मा निराकार है या साकार? कोई निराकार मानता है तो कोई साकार। वस्तुत: परमात्मा स्वयं तो निराकार हैं, लेकिन धर्म-स्थापनार्थ वे एक साकार तन में अवतरित होते हैं। वह साकार रूप परमात्मा का स्वरूप नहीं है वरन रथ का रूप है जिसके माध्मय से परमात्मा अपना दिव्य कार्य करते हैं। यह है निराकार और साकार का रहस्य।

रथ का अपना महत्व है लेकिन वह परमात्मा नहीं है। इस द्वारा परमात्मा हमारे समक्ष एक उच्चतम आदर्श भी प्रस्तुत करते हैं। हम आत्मा हैं तथा शरीर हमारा रथ है। हम रथ नहीं वरन् रथ पर विराजमान आत्मा रूपी रथी हैं। इस अनुभूति से हम साक्षी-द्रष्टा बन अपने को ज्योतिबिन्दु आत्मा समझ ज्योतिबिन्दु परमात्मा की निरंतर स्मृति में रह सदा अतीन्द्रिय आनंद की अनुभूति कर सकते हैं।

परमात्मा का जन्म नहीं होता

कोई परमात्मा को अजन्मा मानता है तो कोई मानता है कि वह मां के गर्भ से जन्म लेता है। वास्तव में परमात्मा अजन्मा है, लेकिन मानवता के कल्याणार्थ वे दिव्य जन्म लेते हैं अर्थात् प्रजापिता ब्रह्मा के साकार साधारण तन में दिव्य प्रवेश करते हैं। उनका जन्म दिव्य और अलौकिक है। वे कर्मातीत हैं। अत: उनका जन्म कर्म-बंधन के वश नहीं होता।

वे स्वयंभू हैं तथा स्वेच्छा से कल्प के अंत में अर्थात् संगमयुग में सतधर्म की स्थापना करने के लिए अवतरित होते हैं। परमात्मा सभी मनुष्यों को इस दुखमय दुनिया से छुड़ाकर शांति के धाम परमधाम ले जाते हैं।

एक नहीं है शिव और शंकर

शिव और शंकर में हैं महान अंतर, अज्ञानता के चलते मनुष्यों की सबसे बड़ी भूल

शिव

शिवलिंग परमात्मा शिव की प्रतिमा है। परमात्मा निराकार ज्योति स्वरूप है। शिव का अर्थ है कल्याणकारी और लिंग का अर्थ है चिह्न। यानि कल्याणकारी परमात्मा को साकार में पूजने के लिए शिवलिंग का निर्माण किया गया। शिवलिंग काला इसलिए दिखाया गया क्योंकि अज्ञानता रूपी रात्रि में परमात्मा अवतरित होकर अज्ञान-अंधकार मिटाते हैं। परमपिता परमात्मा शिव देवताओं एवं समस्त मनुष्यात्माओं के पिता हैं। उनका दिव्य अवतरण होता है। वे अजन्मा, अभोक्ता, अकर्ता और ब्रह्मलोक के निवासी हैं।

शंकर

शिव और शंकर में उतना ही अंतर है जितना कि पिता और पुत्र में। शंकर का आकारी शरीर है। शंकर परमात्मा शिव की रचना है। परमात्मा शिव ने शंकर को इस कलियुगी सृष्टि के विनाश के लिए रचना की है। यही वजह है कि शंकर हमेशा शिवलिंग के सामने तपस्या करते हुए दिखाए जाते हैं। यदि शंकर स्वयं भगवान होते तो उन्हें ध्यान करने की कोई जरूरत नहीं। ध्यानमग्न शंकर की भाव-भंगिमाएं एक तपस्वी के अलंकारी रूप है। शंकर और शिव को एक मिला देने के कारण परमात्म प्राप्तियों से वंचित रहे।

भक्तों से अपील: परमात्मा को अवतरित हुए सृष्टि पर 78 वर्ष हो गए हैं। लेकिन हम सभी शिव और शंकर की भ्रांतियों में ही उलझे रहे। इसलिए अब जरूरत है कि परमात्मा शिव को सही रूप से पहचाने और शक्तियों से खुद को भरपूर करें।

भगवान आ चुके हैं धरती पर

जी हां, यह सुनकर भले ही आपको आश्चर्य लगे लेकिन यदि आप राजयोग का अभ्यास करने के बाद आप इस सत्य को स्वीकार करेंगे कि परमात्मा इस धरा पर आ चुका है और वह सृष्टि की पुनर्स्थापना का कार्य कर रहे हैं। शिव को तो अजन्मा और मृत्युंजय माना गया है। वो तो देवों के भी देव सर्वेश्वर है, अत: उनका जन्म किसी देवता या मनुष्य के रूप में नहीं होता है। शिव की महिमा को हम शब्दों में बयां नहीं कर सकते हैं। सतयुगी पावन तथा सुखी सृष्टि रचने के लिए वह कलियुग के अंत में एक साधारण मनुष्य के तन में परकाया प्रवेश करते हैं। जिसका नाम वह प्रजापिता ब्रह्मा रखते हैं। उनके मुख से ईश्वरीय ज्ञान और सहज राजयोग की शिक्षा देकर वह मनुष्य को देवता बनाते हैं। इस शिक्षा से मनुष्य दैवी गुणों से संपन्न होकर देवपद को प्राप्त कर लेता है।

देवताओं पर पुष्प और शिव पर धातुरा क्यों?

यह कितने आश्चर्य की बात है कि देवी- देवताओं पर विभिन्न प्रकार के सुगंधित पुष्प चढ़ाए जाते हैं, लेकिन परमात्मा शिव जो सभी देवी देवताओं के रचयिता है उन पर आक-धतूरा चढ़ाया जाता है। कल्प के अंत में जब परमात्मा अवतरित होते हैं तो उस समय सर्व आत्माएं विकारों के वशीभूत होकर तमोप्रधान बन चुकी होती हैं। उन्हें फिर से पावन बनाने के लिए पतित-पावन परमात्मा ब्रह्मा मुख से पांचों विकारों रूपी काम, क्रोधादि आदि विकारों को त्यागने की शिक्षा देते हैं। इस तरह मनुष्यात्माएं पांच विकारों का दान देकर पतित से पावन बन जाते हैं। इसी महान कर्त्तव्य के प्रतीक के रूप में परमात्मा शिव पर आज भी आक-धतूरा आदि चढ़ाया जाता है।